दिनांक 30 नवम्बर, 2009 को दौलतपुर, बाराबंकी में आयोजित कृषक–वैज्ञानिक सम्मेलन हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ आयोजित कृषक एवं वैज्ञानिक सम्मेलन में शामिल होकर मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहते थे कि सच्चा भारत गाँवों में बसता है। यदि आपको भारत की सच्ची तस्वीर देखनी है तो गाँवों में जाना होगा। ग्रामीण विकास की कोई भी योजना कृषि एवं कृषकों के विकास से ही प्रारम्भ होती है। कृषि हमारी जीवन पद्धति एवं संस्कृति का एक अंग है। कृषि एवं बागवानी मे उत्पादन बढ़ाकर और इन पर

आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करना, बेरोजगारी की समस्या से निपटने का एक तरीका हो सकता है।

वस्तुतः देश के विकास का ताना–बाना प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग पर आधारित है। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे हमेशा के लिए समाप्त न हों जायें तथा उनकी अक्षुण्यता विद्यमान रहे, ताकि जन–सामान्य की बुनियादी आवश्यकताएं दीर्घावधि तक बराबर पूरी होती रहें।

आज प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, उनकी वर्तमान स्थिति तथा क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर कृषि–प्रबन्धन को एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप देना समय की मांग है। कृषि के

विकास के लिए आधुनिक तकनीकी एवं संसाधनों का भरपूर प्रयोग आवश्यक है।

मेरे मन में महान कथाकार मुंशी प्रेम चन्द की कहानी ''पूस की एक रात'' के किसान हल्कू की तस्वीर उभर आती है। हमें अब किसान की तकदीर बदलनी होगी। तदबीर से तकदीर बदलती है और यह सारी तरकीबें हमारे विशेषज्ञ व वैज्ञानिकों के पास है। श्री रामसरन वर्मा ने एक राह दिखाई है। अच्छी है। मंजिल मिल सकती है। कोशिश करनी होगी।

समाचार–पत्रों के माध्यम से मुझे जब यह जानकरी हुई कि श्री रामसरन वर्मा ने अथक प्रयास एवं शोध से केला, टमाटर और आलू की नई किस्म विकसित करने में सफलता प्राप्त की है तो मेरी श्री

वर्मा से मिलने की जिज्ञासा हुई कि कैसे उन्होंने इतना बड़ा काम किया। फिर मैंने राजभवन बुलाकर इनसे मुलाकात की और इनके प्रयोग के बारे में जानकारी ली।

मुझे खुशी है कि श्री वर्मा के व्यवहारिक एवं उच्च खेती के अनुभव एवं शोध से प्रेरणा प्राप्त करने के लिये अब तक लगभग बीस हजार किसान इनसे जुड़ चुके हैं और अपने खेतों में इस तकनीकी का सफल प्रयोग कर अपनी आय बढ़ा रहे हैं। इस अच्छे कार्य के लिये मैं श्री रामसरन वर्मा को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वह इसी प्रकार अन्य फसलों पर भी अपना शोध बराबर जारी रखेंगे।

देश एवं प्रदेश की खुशहाली के लिये कृषि एवं उद्यान उत्पादन को बढ़ाना आवश्यक है। देश के कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालयों

एवं अन्य शिक्षण संस्थानों को कृषि एवं उद्यान उत्पादन में अपेक्षित अभिवृद्धि करने के उद्देश्य से आधुनिकतम उत्तम से उत्तम तकनीक की खोज को आगे बढ़ाना चाहिए। अनुसंधानों को प्रयोगशाला से खेतों एवं उद्यान तक पहुँचाकर किसान भाईयों एवं बागवानों का सही मार्गदर्शन करने से ही वैज्ञानिक प्रयोगों का लाभ समाज को मिल सकेगा।

प्रदेश की भौगोलिक विविधता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में कृषि की परिस्थितियाँ भिन्न–भिन्न हैं। इसलिये एक साधारण गरीब किसान को उन्नत और वैज्ञानिक तकनीक अपनाते हुए खेती–बाड़ी करने की सुविधा उपलब्ध कराये जाने की भी आवश्यकता है। इस कार्य में

हमारे कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि अनुसंधान संस्थाएं अपना विशिष्ट सहयोग दे सकती हैं।

मुझे आशा है कि इस कृषक–वैज्ञानिक सम्मेलन के माध्यम से वैज्ञानिकों के विचार–विमर्श द्वारा कृषकों को उन्नत खेती हेतु सही एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन अवश्य प्राप्त होगा।

धन्यवाद – नमस्कार।